राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

कृतस्य क्रियामाणस्य, यः फलं नैव पश्यति ।
स तेन नितरां दुःखी, भूत्वा शीघ्रं विपद्यते ॥१४३॥

जो अपने किये गये और किये जाते हुए कार्य का फल नहीं देखता है, वह उससे बहुत दुःखी होकर शीघ्र ही मर जाता है ।

The one who does not see the effects/fruits of his past and current work quickly dies out of unhappiness. (or just unhappy)

कृते च प्रतिकर्त्तव्यम्, एष धर्मः सनातनः ।
अस्योल्लङ्घनकर्ता तु, साफल्यं लभते नहि ॥१४४॥

उपकार करने वाले का प्रत्युपकार करना चाहिये, यह सनातन धर्म है । परन्तु इसका उल्लङ्घन करने वाला तो सफलता प्राप्त नहीं करता ।

It is the eternal truth that one should help back those who help him. But the one cannot be successful who violates that.

कृतो यो निश्चयः पूर्वं, तदाचारः प्रशस्यते ।
निश्चितं टलनं नूनं, किं वाच्यताकरं नहि ? ॥१४५॥

जो पहले निश्चय कर लिया गया, उसके अनुसार आचरण करना ही प्रशंसनीय होता है । निश्चय से टल जाना क्या निन्दाकारी नहीं होता ?

It is praiseworthy/admirable to follow up and fulfil the commitment. Isn't the one who avoids the commitment blameworthy/disgraceful?

केवलं कार्यकालोऽस्ति, बाल्येन सह यौवनम् ।
अत्राभिनन्दिता व्यक्तिः, श्रेष्ठं कार्यं करोति हि ॥१४६॥

काम करने का समय केवल बाल्यावस्था के साथ युवावस्था होती है । इस समय अभिनन्दित किया हुआ व्यक्ति निश्चितरूप से श्रेष्ठ काम करता है ।

For work, there is only childhood and young age. The person who is praised at that age surely does great work.

क्रोधः शत्रुर्मनुष्यस्य, जेतुं शक्यः कदापि न ।
तस्मिन् जिते जितं किं न ?, सर्वमेव जितं ननु ॥१४७॥

मनुष्य का शत्रु क्रोध होता है, जो कभी जीता नहीं जा सकता । उस क्रोधरूपी शत्रु को जीत लेने पर क्या नहीं जीत लिया जाता ? सब कुछ ही निश्चितरूप से जीता हुआ हो जाता है ।

Anger is the enemy of man. It can never be defeated. What cannot be won by defeating the enemy in the shape of anger? Surely then everything can be achieved.

क्षणभङ्गुर – देहेन, शुभं कार्यं व्यधत्त यः ।
स्मृतिमात्रावशिष्टोऽपि, चिरमत्र स जीवति ॥१४८॥

जिसने अपने क्षणभङ्गुर शरीर से शुभकर्म कर लिया, केवल स्मृति का पात्र बना हुआ भी वह इस लोक में यहाँ चिरञ्जीवी रहता है ।

The one who deed good deeds in this mortal body is worth remembering and through it achieves immortality in this world.

खाद्यं पेयं यदा नैव, शरीरं किं तदा स्थिरम् ? ।
पुनर् विना शरीरं च, वृथा हि विश्ववैभवम् ॥१४९॥

जब खाद्य पेय पदार्थ न हो, तो क्या शरीर स्थिर रह सकता है ? और फिर शरीर के बिना तो विश्व की वैभवता व्यर्थ है ।

Is it possible for the body to be still if there is nothing to eat and drink? Without the body all glory of the world is useless.

गणेशो गणतन्त्रे चेत्, पूज्यते नैव सादरम् ।
कीदृशं गणतन्त्रं तद्, विचार्येदं निगद्यताम् ॥१५०॥

यदि गणतन्त्र में गणेश जी की सादर पूजा नहीं की जाती है तो वह कैसा गणतन्त्र है ? यह विचार कर बताओ ।

Which kind of republic is that where Ganesh is not worshiped with respect? Do think and tell.

गीतां रामायणं नित्यं, योऽधीत्यापि न जीवने ।
उत्तारयति ततः कोऽन्यो, मन्दभाग्यो भविष्यति ? ॥१५१॥

जो नित्य गीता और रामायण का स्वाध्याय करके भी उनकी शिक्षा को अपने जीवन में नहीं उतारता है, उससे ज्यादा मन्दभागी कौन होगा ?

Who can be more ill fated than the one who constantly studies Gita and Ramayana but does not use that knowledge in the life?

गुणानां निन्दका नैके, विरला वै प्रशंसकाः ।
निन्दया प्रचुरा हानिः, प्रशंसा लाभदा सदा ॥१५२॥

गुणों की निन्दा करने वाले अनेक हैं, किन्तु प्रशंसा करने वाले तो विरल ही हैं । निन्दा से बहुत हानि होती है । प्रशंसा तो सदा लाभ ही देने वाली है ।

There are many people who condemn virtues and rare are those who glorify them. Many problems are created by condemnation but praising always brings prosperity.

गुणानां गुणवेत्तारो, विरला एव केचन ।
ये तान् सम्पूज्य सम्मान्य, यशोऽर्जन्ति स्वयं महत् ॥१५३॥

गुणवानों के गुणों को जानने वाले तो कोई विरल ही होते हैं । जो उन गुणवानों का पूजन-सम्मान करके स्वयं महान् यश अर्जित कर लिया करते हैं ।

Rare are those who know the virtues of virtuous people. They who show them respect and worship them earn a great fame.